चंडी प्रसाद भट्ट,
सर्वोदय केन्द्र गोपेश्वर (चमोली)
दिनांक १५, मार्च, १९८२

प्रतिष्ठा में,
आदरणीया श्रीमती इन्दिरागांधी,
प्रधान मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली

माननीया,

वान्तरिक हिमालय में, सीमान्त जनपद चमोली के भौगोलिक दृष्टि से अत्यन्त संवेदशील क्षेत्र जोशीमठ से बद्रीनाथ धाम के बीच विष्णुप्रयाग जल विद्युत परियोजना का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना इतनी ऊंचाई पर अपने प्रकार की पहली योजना है। इस जल विद्युत परियोजना के अन्तर्गत अलकनन्दा का जल लाम्बगड़ के पास रोककर उसे एक सुरंग द्वारा जोशीमठ के सामने हाथीपर्वत शिखर तक लाकर लगभग एक हजार मीटर का गिराव देकर जोशीमठ नगर की जड़ पर एक विशाल भूमिगत शक्तिगृह में डाला जाना है। इसके लिये प्रारंभिक कार्य जोरों पर चल रहा है।

यद्यपि विषय-विशेषज्ञों ने इसके निर्माण में भौगोलिक व अन्य तकनीकी पहलुओं पर विचार कर लिया होगा, फिर भी यहां के पर्यावरण प्रेमियों को इसके निर्माण पर गहरी चिन्ता है, जो आप तक पहुंचाना आवश्यक है। जिन बिन्दुओं पर चिन्ता व्यक्त की जा रही है वे संक्षेप में निम्न हैं :

१- मध्य हिमालय का यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील है और यहां के पहाड़ बहुत कच्चे हैं जिनमें भूस्खलन और भूक्षरण तेजी से जारी है। प्रति वर्ष इसकी गति व मात्रा निरन्तर बढ़ती जा रही है।

२- योजना के लिये चुना गया क्षेत्र अधिकांशतः खड़े ढाल वाले हिमाच्छादित पर्वतों से घिरा है जहां बड़े पैमाने पर हिमखण्डों का भूस्खलन होता रहता है।

३- इस योजना के लिये मोटर सड़क का निर्माण (आस पास) जोशीमठ नगर के निचले हिस्से में होना है तथा मुख्य निर्माण जोशीमठ के सामने की पहाड़ी पर होना है। भूवैज्ञानिकों के अनुसार जोशीमठ नगर एक भूस्खलन पर बसा हुआ है और इससे अधिक छेड़छाड़ नगर के लिये हानिकारक है। विशेष रूप से विस्फोटकों के प्रयोग के विरुद्ध कड़ी चेतावनी दी गयी है।

४- अब इस योजना में विश्व प्रसिद्ध फूलों की घाटी से उद्गमित भ्युंडार नदी (पुष्पावती नदी) का जल भ्युंडार गांव के पास से करीब ७ कीलोमीटर लम्बी एक अन्य सुरंग से उत्तर पश्चिम की ओर ले जाकर हनुमान चट्टी में अलकनंदा से मिलने का प्रस्ताव है। इससे गोविन्दघाट से फूलों की घाटी तक कुछ हिस्सों में मोटर सड़कों का निर्माण व अन्य बाहरी हलचल होगी जिससे फूलों की घाटी के वातावरण में अप्रत्याशित परिवर्तन संभावित है।

५- इस पूरे निर्माण कार्य से निकलने वाला मलवा अलकनन्दा के तट के ऊपर उठा देगा और बाढ़ की विभीषिका की सम्भावना बढ़ जायेगी।

६- योजना के निर्माण में मजदूरों की संख्या में अधिक लोगें और उनकी ऊर्जा व अन्य आवश्यकताओं का भार इस क्षेत्र पर पड़ेगा और वनस्पति, वृक्ष व वन्य जन्तुओं का तेजी से ह्रास होगा। इस क्षेत्र की वनस्पति का पिछले वर्षों में कई ऐजेन्सियों द्वारा विनाश किया जा रहा था। इसके प्रतिरोध में भ्युंडार गांव की महिलाओं ने वृक्षों को बचाने के लिये वर्ष १९७८ में "चिपको आन्दोलन" भी चलाया था।

७- योजना के मूल स्थल तक जाने के लिये हेलंग के पास से मारवाड़ी तक एक बाईपास का निर्माण किया जा रहा है, जिससे जोशीमठ, जो भूस्खलन पर बसा है, को भूस्खलन व धंसाव का खतरा तो है ही, बद्रीनाथ जाने के लिये भविष्य में इसी मार्ग का उपयोग होगा और जोशीमठ का पर्यटक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व व्यापारिक महत्व समाप्त हो जायेगा।

८- इस विशाल योजना के निर्माण में विस्फोटकों का अत्यधिक प्रयोग होगा, उससे इन कच्चे पहाड़ों पर दुष्प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा।

उपर्युक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त अनेक बाह्य व आन्तरिक प्रभाव उभर कर सामने आ सकते हैं जिनसे कोई नयी विपत्ति देश को भोगनी पड़ेगी। अत: इस परियोजना के सभी पक्षों पर विचार हेतु पर्यावरण, भूगर्भ, वनस्पति, स्थलान्य व मौसम विज्ञान के विशेषज्ञों की एक समिति का गठन किया जाना चाहिये जो विस्तृत अध्ययन से देश को यह आश्वासन दे सकें कि इस परियोजना के निर्माण से देश को जो लाभ होगा नुकसान उससे अधिक नहीं होगा और तभी योजना पर आगे कार्य आरम्भ करना चाहिये।

इसमें दो मत नहीं हो सकते कि देश की ऊर्जा के साधन बढ़ाने की नितान्त आवश्यकता है और पर्वतीय क्षेत्रों से उद्गमित नदियों से इसका उत्पादन किया जाना चाहिये, किन्तु यह देखना श्रेयस्कर होगा कि उसका मूल्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हमें इतना न चुकाना पड़ जाय जितना उससे लाभ नहीं हो। हिमालय के संदर्भ में इसे अधिक गहरायी से सोचने की इसलिये भी आवश्यकता है क्योंकि हिमालय इस देश के मौसम का नियंत्रक है तथा यहां से कई नदियां निकलती हैं जिनसे राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था जुड़ी है।

Generated by CamScanner from intsig.com

हिमालय की नदियों के तीव्र प्रवाही बहुमूल्य का उपयोग ऊर्जा के उत्पादन में किया जाना तो चाहिये किन्तु हिमालय क्षेत्र में बड़ी विद्युत परियोजनाओं का मोह हमें छोड़ना होगा। छोटी-छोटी जल विद्युत परियोजनाओं की एक शृंखला का निर्माण कर विद्युत की बड़ी परियोजनाओं के कुल योग से भी अधिक विद्युत प्राप्त की जा सकती है। अतः इस ओर हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।

हमें इस बात की बहुत प्रसन्नता और सन्तोष है कि हम लोगों द्वारा चलाये गये वृक्ष बचाने के आन्दोलन-चिपको आन्दोलन की आपने प्रशंसा की और उसे नैतिक समर्थन दिया, पर्यावरण के प्रति आपकी चिन्ता और जागरूकता के बारे में भी हमें समाचार पत्रों में पढ़ने सुनने को मिलता है, अतः हमें विश्वास है कि हिमालय की अस्थिरता व विश्व-विख्यात फूलों की घाटी के प्रति उठ रहे प्रश्न चिन्ह पर आपकी दृष्टि जायेगी और इसके सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद ही आप इसके निर्माण की स्वीकृति देंगे, दक्षिण में प्रस्तावित मूक घाटी परियोजना के प्रति आपके दृष्टिकोण से हमारा यह विश्वास अधिक मजबूत हुआ है।

मुझे पिछले दिनों नैरोबी में विश्व ऊर्जा सम्मेलन में चिपको आन्दोलन के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने का अवसर मिला। उस सम्मेलन में वनों पर दबाव कम करने पर अधिक जोर दिया गया था, सम्मेलन में यह भी बताया गया कि चीन, कनाडा आदि देशों ने अपने यहां नदी-नालों पर लघु बिजली परियोजनाओं की विशाल श्रृंखला खड़ी की है ७० किलोवाट से एक मेगावाट की क्षमता वाली लघु विद्युत परियोजनाओं की संख्या केवल चीन में ही लाखों अस्सी हजार है।

हमारे देश के पर्वतीय क्षेत्रों में भी कई लघु जल विद्युत परियोजनायें हैं। चमोली जनपद में इस समय २०० कीलोवाट से लेकर ७५० किलोवाट तक की क्षमता वाली लगभग दस इकाइयां हैं आगे इनके विस्तार की पर्याप्त सम्भावना है।

नदी नालों के तेज जल प्रवाह से विद्युत उत्पादन की दो इकाइयां, अपने अल्प साधनों से चिपको आन्दोलन में सक्रियभाग लेने वाली हमारी दो संस्थाओं ने प्रायोगिक रूप में आरम्भ की हैं। यदि इन्हें आधुनिक टैक्नोलॉजी मिले तो इसका व्यापक विस्तार हो सकता है।

अतः मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि तीव्रप्रवाहिनी अलकनन्दा विष्णु प्रयाग जल विद्युत परियोजना, तथा गंगा व उसकी सहायक नदियों पर बनने वाली विशाल विद्युत परियोजनाओं के बजाय छोटी छोटी सैकड़ों विद्युत उत्पादन हेतु ग्रामीणों, स्वयंसेवी संस्थाओं और छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जाय और उन्हें वित्तीय व तकनीकी सहायता उपलब्ध करायी जाय। इससे हिमालय को भी क्षति नहीं होगी व पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा विकेन्द्रीकृत व्यवस्था से पर्याप्त विद्युत उत्पादन भी हो सकेगा।

विनीत,

(चण्डीप्रसाद भट्ट)